



कपास की खेती के लिए १ अक्टूबर से ७ अक्टूबर २०२६ तक सत्रहवीं साप्ताहिक सलाह

□. मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें:** फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें:** थ्रिप्स, तेला, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।
- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।

- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मूलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभी उपयोग करें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

स्वच्छ तरीके से कपास चुनना और भंडारण

- अच्छी बाजार कीमत प्राप्त करने के लिए स्वच्छ कपास चुनने की मानक प्रक्रियाओं का पालन करें।
- कपास कि थैलियों के अलावा प्लास्टिक बैग, प्लास्टिक शीट या अन्य सामग्री का उपयोग कपास के संग्रहण और भंडारण के लिए न करें।

ब.स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर / अक्टूबर				
		23	24	25	26	27	28	29	30	01	02	03	04
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जींद								0	0	0	0	0
	सिरसा								0	0	0	0	0
	रोहतक	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी		64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी			
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा			

फसल की स्थिति:

हिसार में फसल, डोडे (गुलर) बनने से लेकर डोडे खुलने/परिपक्व होने तक कि अवस्था में 126 से 161 दिन कि हैं। कुछ खेतों में कपास चुनना चल रहा है। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान पत्तों पर स्प्रे किया गया। अधिकांश खेतों में सफेद मक्खी और तेला कीटों का प्रकोप आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से कम था। हालांकि, कई खेतों में गुलाबी सुंडी के कारण हरे फलियों को हुए नुकसान और कीटों की संख्या आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से अधिक थी। कुछ खेतों में डोडों में सड़न के साथ-साथ कपास पत्ती मरोड़ विषाणु रोग की गंभीरता भी कम देखी गई। कुछ खेतों के कुछ हिस्सों में जड़ सड़न और मुरझान भी देखी गई।

सिरसा में, फसल 135 से 155 दिन कि है और डोडे बनने और खुलने की अवस्था में है। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान बादल छाए रहे, गर्मी, उमस और शुष्क मौसम रहा। सभी सर्वेक्षण स्थलों पर पहली तुड़ाई (कपास चुनना/निकालना) चल रही है, जबकि कुछ स्थानों पर दूसरी तुड़ाई शुरू हो गई है। कपास के खेतों में कुछ स्थानों पर खरपतवारों का प्रकोप देखा गया, जिससे पौधों की संख्या कम हो गई। पोषक तत्वों और पानी की कमी के कारण छिटपुट स्थानों पर पैरा विल्टिंग के लक्षण भी देखे गए। तेला की संख्या 01-10/तीन पत्तियां थी, सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से ऊपर 12-31/तीन पत्तियां और थ्रिप्स की संख्या आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से ऊपर 01-05 निम्फ और वयस्क/तीन पत्तियां थी। आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से ऊपर गुलाबी सुंडी का प्रकोप भी देखा गया, जिससे 30-50% हरे डोडों को नुकसान हुआ। सर्वेक्षण स्थलों में कपास पत्ती मरोड़ विषाणु रोग की घटना बहुत कम थी।

सलाह:

हिसार में किसानों को कपास की फसल में सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। फल लगने की चरम अवस्था के दौरान 13:00:45 का 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से 7 से 10 दिनों के अंतराल पर पर्णय छिड़काव करें। उचित वृद्धि के लिए

आवश्यकतानुसार 2.0% यूरिया और 0.5% जिंक सल्फेट 21% का पर्णिय छिड़काव भी किया जा सकता है। उपयुक्त अवस्था में कसौले से हाथ से निराई करें। तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए 80 ग्राम प्रति एकड़ फ्लोनिक्मिड 50 डब्ल्यूजी और 400 मिलीलीटर एफिडोपायरोपेन 50 जी/एल डीसी का छिड़काव करें। यदि सफेद मक्खी का संक्रमण मध्यम से अधिक हो और उसमें निम्फ मौजूद हों, तो 400 मिलीलीटर पाइरिप्रॉक्सीफेन 10 ईसी या 240 मिलीलीटर स्पाइरोमेसिफेन 240 एससी प्रति एकड़ का छिड़काव करें। कीटनाशकों को टैंक में मिलाकर उपयोग न करें। गुलाबी सुंडी का प्रकोप शुरू होने के बाद से, प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रेप लगाएं। प्रति एकड़ कम से कम 100 फूलों या 20 हरे डोडों की जांच करके गुलाबी सुंडी के संक्रमण का पता लगाएं। फूल आने की शुरुआती अवस्था में ही संक्रमित और गुच्छेदार फूलों (सुंडी प्रभावित फूलों) को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। यदि फूलों/गांठों में गुलाबी सुंडी का संक्रमण आर्थिक सीमा (>5%) से अधिक हो जाए, तो इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @100 ग्राम या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @500 मिली/एकड़ या किनालफोस 20 एएफ @400 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिन बाद किसी वैकल्पिक कीटनाशक का छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न और मुरझाने से प्रभावित क्षेत्रों में, प्रभावित पौधों की जड़ों और आसपास के पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @1.2 ग्राम/लीटर पानी से अच्छी तरह भिगो दें। यदि परविल्ट दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद से एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी @250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी @120 ग्राम प्लस यूरिया 2 किलो प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार भिगो दें। नमी पूरी तरह सूखने के बाद तनावग्रस्त, अच्छी तरह से खिले हुए डोडों में से कपास की तुड़ाई शुरू करें। डोडों में सड़न और पत्ती धब्बों के प्रबंधन के लिए, 10 लीटर पानी में कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% WP @30 ग्राम, उसके बाद प्रोपिनेब 70% WP @25-30 ग्राम, या प्रोपिकोनाजोल 25% EC @10 मिलीलीटर, या एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w SC @10 मिलीलीटर, या फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर SC @6 मिलीलीटर का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है, खासकर फूल आने के 60-120 दिनों के दौरान और मौसम की स्थिति के अनुसार। यदि कालिमायुक्त फफूंद विकसित हो जाए, तो 10-15 दिनों के अंतराल पर प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @ 10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सीओसी) 50% डब्ल्यूपी @ 25 ग्राम/10 लीटर (1250 ग्राम/हेक्टेयर) के 1-2 निवारक/उपचारात्मक स्प्रे करें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे आवश्यकतानुसार खेतों की सिंचाई करें और यदि नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक की कोई खुराक बाकी हो तो उसे भी डाल दें। यदि अचानक पत्तियां मुरझाने लगें, पीली पड़ें या लाल हो जाएं, तो हल्की सिंचाई करें और प्रति एकड़ 15-20 किलोग्राम यूरिया का छिड़काव करें। 200 लीटर पानी में 2 किलोग्राम एनपीके (13:00:45) और 1 किलोग्राम मैग्नीशियम सोडियम (MgSO₄) मिलाकर प्रति एकड़ 2-3 बार पत्तियों पर छिड़काव करें और इसे सप्ताह में एक बार दोहराएं। पैराविल्ट के लक्षण दिखने पर, कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 100 ग्राम और यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार छिड़काव करें। यह छिड़काव लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद शुरू करें या प्रभावित पौधों पर लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद (24 घंटे के भीतर) कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम (1 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) या सोडियम बेंजोएट @ 50 मिलीग्राम प्रति लीटर (5 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी मैन्युअल रूप से और/या पीले चिपचिपे जालों का उपयोग करके 8-10 प्रति एकड़ की दर से करते रहें और खेत की मेड़ों और आसपास के क्षेत्रों को सफेद मक्खी के अन्य वैकल्पिक मेजबान पौधों से मुक्त रखें। तेला और थ्रिप्स जैसे अन्य पत्तों का रस चूसने वाले कीटों की निगरानी जारी रखें। इसके लिए प्रति एकड़ 20 पौधों का निरीक्षण करें और प्रत्येक पौधे की तीन पत्तियों के नीचे से भी निरीक्षण करें। सफेद मक्खी के वयस्कों को नियंत्रित करने के लिए, 200 लीटर पानी में डिनोटेफुरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिक्मिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या एफिडोपायरोपेन 50 जी/एल @ 400 मिलीलीटर या डायफेथियूरॉन 50 डब्ल्यूपी (जहां सिंचाई या वर्षा के कारण पर्याप्त नमी हो) @ 200 ग्राम या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 500 मिलीलीटर/एकड़ का प्रयोग करें। यदि चिपचिपी, चमकदार और तैलीय पत्तियां दिखाई दें और सफेद मक्खी के निम्फ अधिक हों, तो स्प्रे के 3-5 दिन बाद 200 लीटर पानी में पाइरिप्रॉक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिलीलीटर या बुप्रोफेज़िन 25 एससी @ 400 मिलीलीटर या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी 240 मिलीलीटर प्रति एकड़ का प्रयोग करें। कालिमायुक्त फफूंद की स्थिति में, प्रोपिकोनाजोल 25 ईसी @ 1 मिली/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सीओसी) 50 डब्ल्यूपी @ 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव 10-15 दिनों के अंतराल पर एक या दो बार करें। तेला के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए, जहां भी तेला की संख्या आर्थिक दृष्टि से हानिकारक स्तर (2 निम्फ/पत्ती) से अधिक हो, वहां 200 लीटर पानी में टोल्फेनपाइराड 15 ईसी @ 300-400 मिली या फेनपाइरोक्सिमेट 5 ईसी @ 300 मिली या डिनोटेफुरान 20 एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ का प्रयोग करें। सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे जाल लगाएं। थ्रिप्स और गुलाबी सुंडी की शुरुआती बढ़ती संख्या को नियंत्रित करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क (एनएसकेई) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) का 5 मिली/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। गुलाबी सुंडी की संख्या को नियंत्रित करने के लिए इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी का 100 ग्राम या स्पिनेटोरम 11.7 एससी का 170 मिली या प्रोफेनोफोस

50 ईसी का 500 मिली प्रति एकड़ छिड़काव करें और प्रति एकड़ 200 लीटर पानी का उपयोग करें। देसी (आर्बोरियम) कपास में 5% फलने वाले भाग को नुकसान (फैले हुए वर्गाकार पाती या गिरे हुए फलने वाले भागों में) होने पर चिंतीदार सुंडी को नियंत्रित करने के लिए स्पिनोसाड का 75 मिली/एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। भारी बारिश और जलभराव की स्थिति में, फसल को नुकसान से बचाने के लिए खेतों से अतिरिक्त पानी निकालने के लिए उचित जल निकासी बनाए रखें। जड़ सड़न और मुरझान रोग की घटनाओं की नियमित रूप से निगरानी करें। शुरुआती लक्षणों वाले पौधों और उनके आसपास के पौधों को ट्राइकोडर्मा एसपीपी. 1% डब्ल्यूपी @ 50 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी @ 12 ग्राम/10 लीटर पानी से अच्छी तरह भिगो दें ताकि जड़ सड़न और मुरझान रोग को नियंत्रित किया जा सके।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर / अक्टूबर				
		23	24	25	26	27	28	29	30	01	02	03	04
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	नागौर								0	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी		
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा		

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में फसल, की डोडे (गुलर) बनने से लेकर डोडे फूटने (खुलने) तक की अवस्था 131 से 147 दिन की है। समय पर बोई गई फसल में कपास की तुड़ाई (चुनाई) जारी है। तेला की संख्या 0.0 से 4.0 प्रति तीन पत्ती, सफेद मक्खी की संख्या 0.0 से 27.0 प्रति तीन पत्ती और थ्रिप्स की संख्या 0.0 से 5.0 प्रति तीन पत्ती के बीच पाई गई।

बांसवाड़ा में फसल, फूल आने और डोडे (गुलर) बनने की अवस्था में 85 से 92 दिन पुरानी है। समय पर छिड़काव के कारण खेत साफ-सुथरे हैं और फसल की स्थिति अच्छी है। खरपतवारों का कोई प्रकोप नहीं है। पत्तों का रस चूसने वाले कीटों में, सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से कम और तेला का प्रकोप आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से अधिक था। गुलाबी सुंडी का कोई प्रकोप या रोग का प्रकोप नहीं है।

सलाह :

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसलों में कीटों और रोगों की नियमित निगरानी करें। पिछले वर्ष जिन स्थानों पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप पाया गया था, उन स्थानों पर इस वर्ष भी इसके प्रकोप की गहन निगरानी आवश्यक है। गुलाबी सुंडी की गतिविधि पर नज़र रखने के लिए 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाएं। यदि प्रति 100 फूलों में से 5 से अधिक फूलों पर रोसेट (सुंडी प्रभावित फूल) दिखाई दें या डोडों (गुलरों) में 5% से अधिक कीटों का प्रकोप हो, तो प्रोफेनोफोस 50% ईसी को 2.5 मिली/लीटर की दर से या इमेक्टेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी को 0.50 ग्राम/लीटर की दर से या इंडोक्साकार्ब 14.5 एसजी को 1.0 मिली/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिक्मिड 50 डब्ल्यूजी का 0.40 ग्राम/लीटर या एफिडोपायरोपेन 50 डीसी का 1.50 मिलीलीटर/लीटर पानी में या थियामेथॉक्सम 24 डब्ल्यूजी का 0.5 ग्राम/लीटर पानी में छिड़काव करें। सफेद मक्खी के निम्फ की स्थिति में, पाइरिप्रॉक्सीफेन 10% ईसी का 2.5 मिलीलीटर/लीटर या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एसजी का 1.25 मिलीलीटर/लीटर पानी में छिड़काव करें। वहीं, ईटीएल से अधिक थ्रिप्स के संक्रमण की स्थिति में, स्पिनेटोरम 11.7 एसजी का 0.84 मिलीलीटर/लीटर या प्रोफेनोफोस 50 ईसी का 2.5 मिलीलीटर/लीटर पानी में छिड़काव करें। यदि कालिमायुक्त फफूंद लग जाए, तो 10-15 दिनों के अंतराल पर प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @ 10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सीओसी) 50% डब्ल्यूपी @ 25 ग्राम/10 लीटर पानी (1250 ग्राम/हेक्टेयर) का 1-2 निवारक/उपचारात्मक छिड़काव करें। यदि अचानक मुरझाने, पत्तियों के पीले पड़ने और लाल होने की समस्या हो, तो हल्की सिंचाई करें और प्रति एकड़ 15-20 किलोग्राम यूरिया का छिड़काव करें। प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में 2 किलोग्राम एनपीके (13:00:45) और 1 किलोग्राम एमजीएसओ4 का 2-3 पर्णीय छिड़काव करें और इसे सप्ताह में एक बार दोहराएं। पैराविल्ट के लक्षण दिखाई देने पर, लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत

बाद से एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 बार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 120 ग्राम और यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से पौधों को भिगोएँ। या फिर, लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद (24 घंटे के भीतर) केवल प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम (1 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) या सोडियम बेजोएट @ 50 मिलीग्राम प्रति लीटर (5 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

दक्षिण राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, सलूंबर और उदयपुर) में, जहां नम मिट्टी की स्थिति में हाथ से निराई संभव नहीं है, किसानों को सलाह दी जाती है कि यदि खेत में घास वाली खरपतवारें फैली हों तो क्लिज़ालोफ़ॉप एथिल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें, या चौड़ी पत्ती वाली खरपतवारों के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.25 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें, या घास और चौड़ी पत्ती वाली दोनों प्रकार की खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% ईसी + क्लिज़ालोफ़ॉप एथिल 4% ईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें। कपास के खेतों में पत्तों का रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण के किसी भी लक्षण के लिए लगातार निगरानी करते रहें। यदि संक्रमणआर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर) से अधिक हो जाए तो चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क (एनएसकेई) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) @ 5 मिली/लीटर पानी का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और तेला को नियंत्रित करने के लिए 8-10 पीले चिपचिपे जाल प्रति एकड़ की दर से लगाएं। यदि रस चूसने वाले कीटों की संख्याआर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तरसे अधिक हो जाए, तो इनमें से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: बुप्रोफेज़िन 25 EC @ 1.25 लीटर/हेक्टेयर या डायफेंथियूरॉन 50 WP @ 625 ग्राम/हेक्टेयर या फ्लोनिक्वैमिड 50 WG @ 200 ग्राम/हेक्टेयर। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप लगाएं (5/हेक्टेयर)। गुलाबी सुंडी की उपस्थिति की नियमित रूप से निगरानी करें और प्रभावित फूलों (रोसेट फूल) को इल्लियों सहित नष्ट कर दें। पत्ती धब्बा रोग के प्रबंधन के लिए, 10 लीटर पानी में कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्ल्यूपी @ 30 ग्राम का पर्णय छिड़काव, उसके बाद प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी @ 25-30 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @ 10 मिलीलीटर या एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w एससी @ 10 मिलीलीटर या फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 मिलीलीटर का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर / अक्टूबर				
		23	24	25	26	27	28	29	30	01	02	03	04
	खरगाँव	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0	0	0
	धार	0	0	0	0	7.2	0	0	0	0	0	0	0
	खांडवा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी				64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में बोई गई फसल, फूल आने और डोडे (गुलर)बनने की अवस्था में 77 से 125 दिन पुरानी है। आवश्यकतानुसार खरपतवार नियंत्रण और उर्वरक का प्रयोग किया गया है। मौसमी खरपतवारों ने खेतों को बुरी तरह प्रभावित किया है। कुछ खेतों में तेला, चेपा और सफेद मक्खियों का प्रकोप देखा गया है। अभी तक किसी भी प्रकार की बीमारी की सूचना नहीं मिली है।

सलाह:

खंडवा में किसानों को समय पर खरपतवार नियंत्रण करने की सलाह दी जाती है। यदि मिट्टी नम हो और हाथ से खरपतवार निकालना संभव न हो, तो घास वाली खरपतवारों के लिए क्लिज़ालोफ़ॉप एथिल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी की दर से या चौड़ी पत्ती वाली खरपतवारों के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.5 मिली/लीटर पानी की दर से या घास और चौड़ी पत्ती वाली दोनों प्रकार की खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्लिज़ालोफ़ॉप एथिल 4% एमईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी की दर से खरपतवारनाशक का प्रयोग करें। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए प्रति

एकड़ 2 फेरोमोन ट्रैप लगाएं। 25% नाइट्रोजन की विभाजित खुराक को कॉलम विधि द्वारा 10 से 15 सेमी की गहराई पर डालें। पत्तों का रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए NSKE 5%+ नीम का तेल 5 मिली/लीटर या नीम के तेल पर आधारित फॉर्मूलेशन (300 या 1500 पीपीएम) 5 मिली/लीटर + 1.0 ग्राम कपड़े धोने के डिटरजेंट इमल्शन का प्रयोग करें। यदि परविल्ट रोग दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक-एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 100 ग्राम और यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार सिंचाई करें। लंबे समय तक सूखे की स्थिति में, फल लगने की चरम अवस्था के दौरान 13:00:45 @ 2 किलोग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर 7 से 10 दिनों के अंतराल पर पर्णिय छिड़काव करें। कपास के फूलों को प्राकृतिक रूप से झड़ने से बचाने के लिए NAA @ 4 मिलीलीटर /10 लीटर पानी का पर्णिय छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट (<https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory>) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:

Dr. Vijay N. Waghmare

Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:

Dr. G. T. Behere

Dr. A. S. Tayade

Dr. A. H. Prakash

Dr. S.K. Verma

Dr. S.K. Sain

Dr. Rishi Kumar

Dr. Babasaheb B. Fand

Dr. Ramkrushna GI

Dr. S.P Gawande

Dr. Shivaj Thube

Dr. R.R. Chapke

Regional language translation:

Hindi : Mr Ghanshyam Deogirakar & Mr Ashutosh Mishra

Punjabi : Dr Amarpreet Singh

Tamil : Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan

Telugu : Dr L. Rajesh Chaudhary

Marathi : Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge

Gujrati : Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah

Oriya : Dr B. S. Nayak

Kannada : Dr Neelkanth Hiremani